The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 7 | July 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और प्रीतिलता वादेदार

डॉ0 फ़ैज़ान अहमद
प्रोफ़ेसर (राजनीति विज्ञान) एवं कार्यवाहक प्राचार्य
जी0बी0पन्त (पी0जी0) कालेज कछला, बदायूँ (उ0प्र0)
Email: gbpantdegreecollege@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords: *स्वतन्त्रता संग्राम, क्रान्तिकारी गतिविधियाँ, चटगाँव शस्त्रगार काण्ड, यूरोपियन क्लब पर हमला, शहादत, सम्मान।*

ABSTRACT

प्रीतिलत वादेदार भारत की एक प्रमुख महिला क्रान्तिकारी थीं। बचपन से ही उनक मन में देश के प्रति वफ़ादारी का बीजारोपण हो चुका था। जीवन के आरम्भिक दिनों में ही चटगाँव में उनकी भेंट महान् क्रान्तिकारी सूर्यसेन से हुई। सूर्यसेन के क्रान्तिमय रूप से प्रीतिलता बहुत प्रभावित हुईं और उनके दल में शामिल हो गईं। सूर्यसेन के एक क्रान्तिकारी साथी रामकृष्ण विश्वास कलकत्ता की जेल में बन्द थे और उन्हें फ़ाँसी की सज़ा हो चुकी थी। सूर्यसेन ने रामकृष्ण विश्वास से मिलने की ज़िम्मेदारी प्रीतिलता को दी। प्रीतिलता ने इस ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाया। वे कई बार रामकृष्ण विश्वास की बहन बनकर उनसे जेल में मिलीं। 'चटगाँव शस्त्रगार काण्ड' में भी प्रीतिलता वादेदार, सूर्यसेन के साथ थीं। ब्रिटिश सैनिकों और क्रान्तिकारियों के बीच खुला युद्ध हुआ। दोनों तरफ़ से अनेक लोग मारे गए, किन्तु प्रीतिलता और सूर्यसेन अंग्रेज़ों के चंगुल से बच निकले। प्रीतिलता के क्रान्तिकारी जीवन का सबसे साहस भरा कार्य 24 सितम्बर 1932 ई0 को 'यूरोपियन क्लब' पर हमला था। इस हमले में कई अंग्रेज़ मारे गए एवं घायल हुए। अंग्रेज़ों की गोली से प्रीतिलता भी घायल हो गईं। अंग्रज़ों के हाथों गिरफ़्तार होने से पूर्व ही उन्होंने पोटैशियम साइनाइड की पुड़िया निगल ली और राष्ट्रहित में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

प्रस्तावना –

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महिला क्रान्तिकारियों में प्रीतिलता वादेदार का नाम प्रथम कोटि के शहीदों के रूप में लिया जाता है। प्रीतिलता वादेदार का जन्म 5 मई 1911 ई0 को तत्कालीन पूर्वी भारत (वर्तमान में बांग्लादेश) में स्थित चटगाँव के एक साधारण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम जगतबन्धु वादेदार तथा माता का नाम प्रतिभा देवी था। उनके पिता नगरपालिका में क्लर्क थे। आय कम होने के कारण परिवार का गुज़ारा मुश्किल से चलता था। भले ही परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, लेकिन जगतबन्धु वादेदार ने अपनी बेटी को अच्छी शिक्षा दिलवाई।

प्रीतिलता वादेदार ने पहली बार चटगाँव के डॉ0 ख़स्तगीर बालिका विद्यालय में एक छात्रा के तौर पर अपनी विलक्षण बुद्धि का प्रदर्शन किया था। उन्होंने 1927 ई0 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 1929 ई0 में उन्होंने ढ़ाका के ईडन कालेज से इण्टरमीडिएट की परीक्षा में पूरे ढ़ाका बोर्ड में पाँचवा स्थान प्राप्त किया। दो वर्ष बाद प्रीतिलता वादेदार ने कलकत्ता के बेथुन कालेज से दर्शनशास्त्र से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। लेकिन तत्कालीन कलकत्ता विश्वविद्यालय के ब्रिटिश अधिकारियों ने क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने के आरोप में उनकी डिग्री को रोक दिया था। कलकत्ता में अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद प्रीतिलता वादेदार चटगाँव लौट आयीं। चटगाँव में ही उन्होंने नंदनकानन अपर्णाचरण नामक एक अंग्रेज़ी माध्यम माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापिका की नौकरी की।

स्कूली जीवन में ही प्रीतिलता 'बालचर संस्था' की सदस्य हो गई थीं। वहाँ उन्होंने सेवाभाव और अनुशासन का पाठ पढ़ा। 'बालचर संस्था' में सदस्यों को ब्रिटिश सम्राट के प्रति एकनिष्ट रहने की शपथ लेनी होती थी। संस्था का यह नियम प्रीतिलता को खटकता था। यहीं उनके मन में ब्रिटिश शासन के प्रति क्रान्ति का बीज पनपा था। बचपन से ही वह रानी लक्ष्मी बाई के जीवनचरित से खूब प्रभावित थीं।

क्रान्तिकारी गतिविधियाँ– प्रीतिलता वादेदार जब ढ़ाका के ईडन कॉलेज से इण्टरमीडिएट कर रही थीं तो उसी दौरान उन्होंने क्रान्तिकारी गतिविधियों में गहरी रुचि लेनी शुरू कर दी थी। बाद में वह स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी लीला नाग के 'दीपाली संघ' में भी शामिल हो गयीं। यह 1930 ई0 का वह दशक था जब बंगाल ने गाँधी जी के अहिंसा के विचारों का परित्याग कर दिया। इसके बाद वहाँ ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सशस्त्र लड़ाई को बढ़ावा देने वाले क्रान्तिकारी संगठनों ने अपनी जगह ले ली। प्रीतिलता के समकालीन एक क्रान्तिकारी **विनोद बिहारी चौधरी** ने कहा था कि **"प्रीतिलता युवा और साहसी थी। वह बहुत जोश के साथ काम करती थी और अंग्रेज़ों को भगाने के लिए दृढ़ थी।"**[1] प्रीतिलता ने भी भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में शामिल होने का फ़ैसला किया।

उन्हीं दिनों सूर्यसेन (मास्टर दा) और निर्मल सेन की मुलाक़ात उनके एक क्रान्तिकारी भाई ने प्रीतिलता वादेदार से कराई। सूर्यसेन के क्रान्तिमय रूप से प्रीतिलता बहुत प्रभावित हुयीं। उस समय सूर्यसेन के सिर पर 10 हज़ार रुपये का इनाम घोषित हो चुका था। सूर्यसेन इधर–उधर छिपकर योजनाएं बनाते और अपने दल के सदस्यों से उन्हें क्रियान्वित कराते। उस समय महिलाओं को क्रान्तिकारी समूहों में शामिल किया जाना दुर्लभ था। लेकिन सूर्यसेन ने प्रीतिलता को न केवल अपने संगठन में शामिल किया, बल्कि उन्हें लड़ने और हमलों का नेतृत्व करने के लिए भी प्रशिक्षित किया। हालाँकि प्रीतिलता के संगठन में शामिल होने से कुछ क्रान्तिकारी नाराज़ भी हो गए थे, लेकिन सूर्यसेन को इस बात का पता था कि बिना किसी शक के एक महिला हथियारों को आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जा सकती है। यही कारण था कि शुरू में संगठन में उनका इस्तेमाल केवल ब्रिटिश अधिकारियों को चकमा देने के लिए किया गया था। लेकिन बाद में उनके रैंक को बढ़ा दिया गया।

सूर्यसेन के एक साथी रामकृष्ण विश्वास कलकत्ता के अलीपुर सेन्ट्रल जेल में बन्द थे। हत्या के एक मामले में उन्हें फाँसी की सज़ा हो चुकी थी। सूर्यसेन ने रामकृष्ण विश्वास से मिलने की ज़िम्मेदारी प्रीतिलता को दी। चकमा देने की कला में माहिर प्रीतिलता ने इस ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाया। बिना किसी शक के वे क़रीब 40 बार जेल में रामकृष्ण विश्वास से मिलीं। वह आसानी से उनकी बड़ी बहन बनकर जेल में चली जाती थीं। जेल अधिकारियों को इस बात का तनिक भी सन्देह नहीं हुआ कि रामकृष्ण विश्वास से मिलने वाली महिला उनकी बहन नहीं, अपितु एक ख़तरनाक महिला क्रान्तिकारी थी। **डॉ0 विद्या प्रकाश** ने लिखा है कि **"जेल में रामकृष्ण विश्वास से प्रीतिलता का निडर होकर मिलने जाना प्रीतिलता की सूझ–बूझ और बहादुरी का प्रमाण था।"**[2] यह राज तब उजागर हुआ, जब अंग्रेज़ी पुलिस को प्रीतिलता का लिखा एक लेख 'रामकृष्ण विश्वास से मुलाक़ात' मिला। अंग्रेज़ों ने 1931 ई0 में रामकृष्ण विश्वास को फाँसी दे दी। इस घटना ने प्रीतिलता के क्रान्तिकारी विचारों को और अधिक बल दिया।

प्रीतिलता वादेदार अपने संकल्पों पर सदैव अडिग रहीं। प्रीतिलता की समकालीन महिला क्रान्तिकारी कल्पना दत्त ने अपनी पुस्तक 'चटगाँव आर्मरी रेडर्सः रिमिनिसेंस' में प्रीतिलता के साथ अपने अनुभव साझा किए हैं। इस पुस्तक में कल्पना दत्त ने खुलासा किया था कि किस तरह से दुर्गा पूजा के दौरान प्रीतिलता बकरे की बलि देने के लिए तैयार नहीं थीं, तब उनके साथी क्रान्तिकारियों ने सशस्त्र संघर्ष में उनकी क्षमता पर सवाल उठाया था। **प्रीतिलता वादेदार** ने कहा था कि **"जब मैं देश की आज़ादी के लिए अपनी जान देने के लिए तैयार हूँ, तो ज़रूरत पड़ने पर किसी की जान लेने में मैं जरा भी नहीं हिचकिचाऊँगी।"** [3] यह घटना उनके दिल में जल रही देशभक्ति की आग और उनके दृढ़ संकल्प को दिखाती है।

चटगाँव शस्त्रागार काण्ड– भारत के क्रान्तिकारी इतिहास में चटगाँव शस्त्रागार काण्ड एक विशेष महत्व रखता है। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सूर्यसेन के नेतृत्व में चटगाँव के दो शस्त्रागारों पर कब्ज़ा कर हथियारों को लूटने की योजना बनायी गई, जिससे कि युवा क्रान्तिकारियों को हथियारबन्द किया जा सके। इसके अतिरिक्त नगर की टलीफ़ोन और टेलीग्राफ़ संचार व्यवस्था को नष्ट करना तथा चटगाँव और शेष बंगाल के बीच रेल सम्पर्क को भंग करना भी इस काण्ड की योजना में शामिल था। 18 अप्रैल 1930 ई0 को चटगाँव स्थित पुलिस और सेना के शस्त्रागारों पर छापा मारा गया। क्रान्तिकारी दल में सूर्यसेन, प्रीतिलता वादेदार, गणेश घोष, लोकीनाथ बाउल, अनन्त सिंह, निर्मल सेन, अपूर्व सेन सहित लगभग 65 क्रान्तिकारी शामिल थे।

क्रान्तिकारियों ने पुलिस तथा सेना के शस्त्रागारों पर कब्ज़ा तो कर लिया लेकिन ये लोग गोला–बारूद पाने में असफल रहे। क्रान्तिकारी यह पता ही नहीं लगा सके कि गोला–बारूद कहाँ रखा है। यह क्रान्तिकारियों की योजना को बहुत बड़ा झटका था। हाँ टेलीफ़ोन और टेलीग्राफ़ संचार व्यवस्था भंग करने तथा रेल यातयात अवरुद्ध करने में इन्हें ज़रूर सफलता मिल गई थी। 22 अप्रैल 1930 ई0 को चटगाँव की पहाड़ियों में क्रान्तिकारियों और ब्रिटिश सेना के बीच जमकर संघर्ष हुआ। इस मुठभेड़ में अंग्रेज़ कैप्टन कैमरान सहित कई अंग्रेज़ सैनिक मारे गये। अंग्रेज़ों की गोली से निर्मल सेन, अपूर्व सेन सहित कई क्रान्तिकारी भी शहीद हो गए। सूर्यसेन तथा प्रीतिलता किसी तरह अंग्रेज़ों के चंगुल से बच निकले। वहाँ से बचकर वे लोग सावित्री देवी (जो क्रान्तिकारियों के प्रति समर्पित भाव रखती थीं) के घर जा कर छिप गए। लेकिन पुलिस को इसका सुराग़ मिल ही गया और वे सावित्री देवी और उनके पति को गिरफ़्तार करके ले गए वहाँ से भी बचकर सूर्यसेन को सुरक्षित जगह पहुँचाकर प्रीतिलता जब अपने घर पहुँचीं तो पुलिस ने उनके घर पर भी छापा मारा। प्रीतिलता से कड़ी पूछ–ताछ की गई, किन्तु सारे प्रयास व्यर्थ हुए। हारकर पुलिस को वहाँ से जाना पड़ा। पुलिस सूर्यसेन के बारे में उनसे कोई भेद न उगलवा सकी। प्रीतिलता वादेदार की वीरता तथा निर्भीकता की प्रशंसा करते हुए **कल्पना राजाराम** ने लिखा है कि **"सूर्यसेन से प्रभावित होते हुए प्रीतिलता का यह विश्वास था कि ब्रिटिश सरकार केवल हिंसा के माध्यम से ही देश से भगायी जा सकती है। प्रीतिलता और उनके साथियों ने बंगाल में ब्रिटिश सरकार पर बहुत से आक्रमण किए। उन्होंने ब्रिटिश शासकों में उत्तेजना व भय फैला दिया तथा उनकी प्रभुसत्ता को चुनौती देने लगीं।"** [4] ब्रिटिश सरकार के निरन्तर बढ़ते हुए अत्याचारों के कारण क्रान्तिकारी दल और अधिक सक्रिय हो गया।

यूरोपियन क्लब पर हमला– मास्टर दा सूर्यसेन ने चटगाँव शस्त्रागार काण्ड में शहीद हुए अपने क्रान्तिकारी साथियों का बदला लेने की योजना बनाई। योजना यह थी कि चटगाँव पहाड़ी की तलहटी में स्थित 'यूरोपियन क्लब' को तहस–नहस करना और शस्त्रों पर कब्ज़ा कर लेना। इस क्लब में एक साइनबोर्ड लगा था, जिस पर लिखा था कि **"कुत्तों और भारतीयों को प्रवेश की अनुमति नहीं है।"**[5] सूर्यसेन इस नस्लवादी और श्वेत वर्चस्ववादी क्लब को निशाना बनाकर अंग्रेज़ों को करारा जबाब देना चाहते थे। इस क्लब में अंग्रेज़ परिवार शाम के समय नाच–गाना एवं आनन्द–उल्लास में मग्न रहते थे। इस 'यूरोपियन क्लब' पर आक्रमण करने का नेतृत्व प्रीतिलता वादेदार को सौंपा गया। 24 सितम्बर 1932 ई0 को रात के समय प्रीतिलता अपने बम और पिस्तौल से लैस दल को लेकर 'यूरोपियन क्लब' पर आक्रमण करने के लिए चल पड़ीं।

हमले के दिन प्रीतिलता ने खुद को एक पंजाबी पुरुष के रूप में तैयार किया। प्रीतिलता के साथ महेन्द्र चौधरी, सुशील डे, प्रफुल्ल दास, प्रभात बल, मनोरंजन सेन, कालीशंकर डे, वीरेश्वर राय, शान्ति चक्रवर्ती, पन्ना सेन आदि क्रान्ति नायक थे। प्रीतिलता और सूर्यसेन को पता था कि मुक़ाबला कड़ा होगा। अंग्रेज़ भी क्रान्तिकारियों को पकड़ कर उनसे संगठन का राज़ उगलवाने की कोशिश कर सकते हैं। अपने लक्ष्य की ओर जाने से पहले प्रीतिलता ने सूर्यसेन से पोटैशियम साइनाइड की पुड़िया लेकर अपने दल के सभी सदस्यों को सौंप दी तथा एक पुड़िया स्वयं अपने पास रख ली। चलने से पहले **सूर्यसेन** ने प्रीतिलता से कहा कि **"क्रान्तिकारी के लिए गिरफ़्तार होकर पुलिस द्वारा अपमानित होने की अपेक्षा मर जाना कहीं अच्छा है। यदि संघर्ष में बच निकलने का अवसर न मिले तो, वहीं साइनाइड खा कर शहीद हो जाना।"**[6] प्रीतिलता ने उनके इस सन्देश को आदेश माना और अपने मिशन पर चल पड़ीं।

शहादत– प्रीतिलता वादेदार के नेतृत्व में क्रान्तिकारी रात्रि में लगभग 10:45 बजे 'यूरोपियन क्लब' पहुँचे और क्लब पर बमों और गोलियों की बौछार कर दी। उस समय क्लब में सभी अंग्रेज़ मदिरापान में मस्त थे। अंग्रेज़ों की तरफ़ से भी गोलियाँ चलीं। कई अंग्रेज़ मारे गए एवं घायल हुए। इस मुठभेड़ में प्रीतिलता को भी एक गोली लगी, किन्तु घायल अवस्था में भी वे अपने दल का नेतृत्व करती रहीं। शीघ्र ही प्रीतिलता को यह अहसास हो गया कि अब वे बचेंगी नहीं और इस दशा में भाग भी नहीं सकेंगी। वे यह नहीं चाहती थीं कि उनके दल के नौजवान सदस्य अंग्रेज़ों की गोली से मारे जाएं। अतः उन्होंने सभी क्रान्तिकारियों को वहाँ से भाग जाने का आदेश दिया। प्रीतिलता ने अंग्रेज़ों के हाथों गिरफ़्तार होने के पूर्व ही पोटैशियम साइनाइड की पुड़िया निगल ली और शहीद हो गईं।

जेब से बरामद हुआ था पत्र– प्रीतिलता वादेदार के आत्म बलिदान के बाद ब्रिटिश उपनिवेशवादियों को तलाशी लेने पर जो पत्र मिला उसमें लिखा था कि **"चटगाँव शस्त्रागार काण्ड के बाद जो मार्ग अपनाया जाएगा, वह भावी विद्रोह का प्राथमिक रूप होगा। यह संघर्ष भारत को पूरी स्वतन्त्रता मिलने तक जारी रहेगा।"**[7] शहादत के समय प्रीतिलता की उम्र मात्र 21 वर्ष थी। इतनी कम उम्र में उन्होंने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का रास्ता अपनाया और उन्हीं की तरह लड़ते हुए स्वयं ही मृत्यु का वरण कर लिया।

सम्मान– पश्चिम बंगाल की राजधानी कलकत्ता (वर्तमान में कोलकाता) में प्रीतिलता वादेदार के नाम से कई सड़कें और स्मारक हैं, जो उनकी शहादत की याद दिलाते हैं। चटगाँव में भी प्रीतिलता वादेदार रोड़ है। जिस स्कूल में वह पढ़ाती थीं उसके परिसर में उनकी एक कांस्य मूर्ति स्थापित की गई है। चटगाँव विश्वविद्यालय और जहाँगीर नगर विश्वविद्यालय में दो महिला छात्रावासों का नाम प्रीतिलता के नाम पर रखा गया है। मार्च 2012 ई0 में प्रीतिलता वादेदार की मृत्यु के लगभग आठ दशक बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय ने मरणोपरान्त उन्हें 1932 ई0 के लिए विशिष्ट योग्यता के साथ उनकी लम्बित कला स्नातक की डिग्री प्रदान की। भारत सरकार द्वारा प्रीतिलता वादेदार के स्नातक प्रमाण पत्र और अंकपत्र की एक प्रति मई 2018 ई0 में उनकी स्मृति में उनके पैतृक गाँव धलघाट, पाटिया, चटगाँव (वर्तमान में बांग्लादेश) में स्थित 'वीर कन्या प्रीतिलता ट्रस्ट' को भेंट की गई थी।

निष्कर्ष– इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रीतिलता वादेदार की शहादत भारत के स्वतन्त्रता संग्राम की एक अविस्मरणीय घटना है। 21 वर्ष की युवती प्रीतिलता ने देश के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर क्रान्तिकारी इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय की रचना की। उन्होंने गुलामी की एक निशानी मिटाने का महान् कारनामा किया था। उनकी महान् प्रेरणा से कई महिलाओं में देशभक्तिपूर्ण क्रान्तिकारी भावना जागृत हुई, जिसने बाद वर्षों में सैन्य संघर्ष को समृद्ध किया। अपने बलिदान से उन्होंने भारत की महिलाओं को यह सन्देश दिया कि वे देश को अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चल सकती हैं। हम समस्त भारतवासी युग–युग तक उनके ऋणी रहेंगे।

सन्दर्भ–

1– https://www.sanatangroup.org – पृष्ठ 03 – दिनांक 29/11/2023 से उद्धृत।

2– डॉ0 विद्या प्रकाश – देश जिनका ऋणी है– पृष्ठ 191 – आकाशदीप पब्लिकेशन्स, दिल्ली – संस्करण 2005 ई0।

3– https://hindi.opindia.com – पृष्ठ 02 – दिनांक 29/11/2023 से उद्धृत।

4– मुख्य संपा0 कल्पना राजाराम– गाँधी, नेहरू, टैगोर एवं आधुनिक भारत के प्रसिद्ध व्यक्तित्व – पृष्ठ 284 – स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली – संस्करण 2022 ई0।

5– https://indianexpress.com –पृष्ठ 02, दिनांक– 29/11/2023 से उद्धृत।

6– डॉ0 फ़ैज़ान अहमद – भारतीय स्वातंत्र्य संघर्ष एवं क्रान्तिकारी आन्दोलन– पृष्ठ 215 – राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली– संस्करण 2017 ई0।

7– https://sanjeevnitoday.com – पृष्ठ 02 दिनांक 09/11/2023 से उद्धृत।